‘अभिनव इमरोज़’ के विशेषांक (जनवरी 2012-जनवरी 2025)

डॉ. त्रिलोक तुलसी
जनवरी 2012
स. देवेन्द्र कुमार बहल

डी.ए.वी कॉलेज विशेषांक
अप्रेल 2012
स. देवेन्द्र कुमार बहल

हिन्दी गजल विशेषांक
जुलाई 2012
स. नरेश शांडिल्य

मंटो की बेटियों के
भारत आगमन पर
नवम्बर 2012
स. मलिक राजकुमार,
स. देवेन्द्र कुमार बहल

अमृता प्रीतम
मार्च 2013
स. डॉ. उमा त्रिलोक

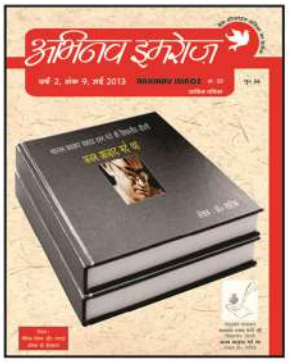

सआदत हसन मंटो
मई 2013
स. देवेन्द्र कुमार बहल

प्रेमचंद
जुलाई 2013
अ. स. कमल किशोर

हाइकु विशेषांक
अक्टूबर 2013
अ. स. मिथिलेश दीक्षित

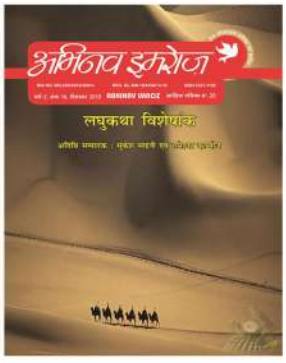

लघुकथा विशेषांक
दिसंबर 2013
अ. स. सुकेश साहनी एवं
अ. स. रामेश्वर काम्बोज

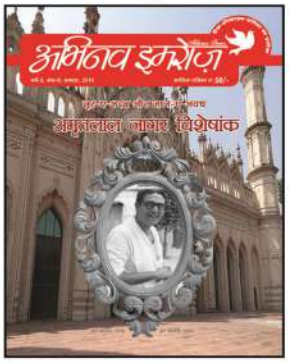

अमृत लाल नागर
अगस्त 2014
अ. स. डॉ. दीप्ति गुप्ता

समावर्तन विशेषांक
सितबंर 2014
स. देवेन्द्र कुमार बहल

कमल किशोर गोयनका
अप्रेल 2015
स. देवेन्द्र कुमार बहल

समकालीन युवा रंगकर्म पर केंद्रित

सितंबर 2015

अ. स. डॉ. जयदेव तनेजा एवं नितिन नारंग 'समर'

विदेश में हिंदी कहानियों की गुलदोज़ी

जनवरी 2016

अ. स. नासिरा शर्मा

हिन्दी कहानी का झरोखा

अगस्त 2016

अ. स. नासिरा शर्मा

हिन्दी कहानी का झरोखा

सितंबर 2016

अ. स. नासिरा शर्मा

आधुनिक युग का सूफ़ीवाद

जनवरी 2017

अ. स. नासिरा शर्मा

सवरकर विशेषांक

नवम्बर 2018

अ. स. हरिन्द्र श्रीवास्तव

ग़ज़ल विशेषांक

मई 2019

स. देवेन्द्र कुमार बहल

फ़ारशी काव्य के पितामह रूदकी

अक्टूबर 2019

अ. स. नासिरा शर्मा

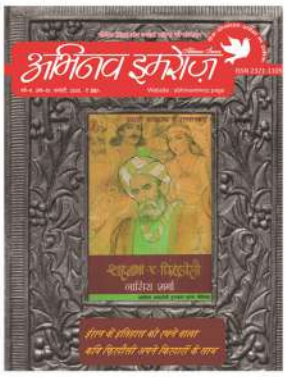

शाहनामा-ए-फ़िरदौसी विशेषांक

जनवरी 2020

अ. स. नासिरा शर्मा

किस्सा जाम का विशेषांक

सितम्बर 2020

अ. स. नासिरा शर्मा

साक्षात्कार विशेषांक

जुलाई 2021

अ. स. डॉ. दिनेश चमोला 'शैलेश'

साक्षात्कार विशेषांक

अगस्त 2021

अ. स. डॉ. दिनेश चमोला 'शैलेश'

साक्षात्कार विशेषांक
सितंबर 2021
अ. स. डॉ. दिनेश चमोला 'शैलेश'

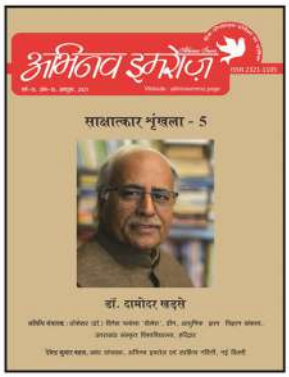

साक्षात्कार विशेषांक
अक्टूबर 2021
अ. स. डॉ. दिनेश चमोला 'शैलेश'

अभिनव इमरोज दसवीं जयंती विशेषांक
जनवरी 2022
स. देवेन्द्र कुमार बहल

श्रीलाल शुक्ल स्मृति विशेषांक
जनवरी 2022
अ. स. नलिन विकास

डॉ. कुसुम अंसल विशेषांक
मार्च 2022
अ. स. नासिरा शर्मा एवं
स. देवेन्द्र कुमार बहल

डॉ. रेनू यादव विशेषांक
अगस्त 2022
स. देवेन्द्र कुमार बहल

डॉ. आशा पाण्डेय विशेषांक
अक्टूबर 2022
स. देवेन्द्र कुमार बहल

मल्लिका मुखर्जी विशेषांक
जनवरी 2023
स. देवेन्द्र कुमार बहल

डॉ. कमला दत्त विशेषांक
अप्रेल 2023
स. देवेन्द्र कुमार बहल

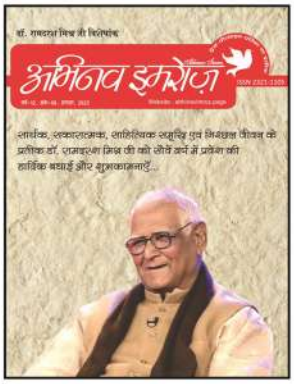

डॉ. रामदरश मिश्र जी विशेषांक
अगस्त 2023
स. देवेन्द्र कुमार बहल

डॉ. वीणा विज उदित विशेषांक
अक्टूबर 2023
स. देवेन्द्र कुमार बहल

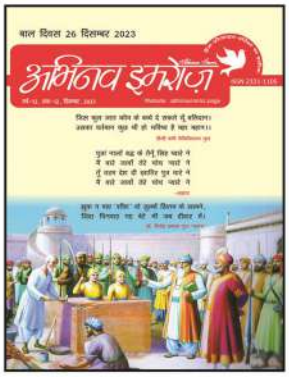

वीर बाल दिवस एवं स्वर्गीय संतराम वत्स्य बाल साहित्य के परोधा विशेषांक, दिसम्बर 2023
अ. स. डॉ. आशुतोष गुलेरी
एवं स. देवेन्द्र कुमार बहल

इमरोज़ श्रद्धांजलि विशेषांक
जनवरी 2024
स. देवेन्द्र कुमार बहल

वन्दना यादव विशेषांक
मार्च 2024
अ. स. डॉ. रेनू यादव

डॉ. राम प्रकाश
साहित्यिक विशेषांक
जून 2024
अ. स. डॉ. श्याम बाबू

हिंदी के रंग चाय के संग
विशेषांक
सितंबर 2024
अ. स. सुश्री एकता अमित व्यास

दो घूंट चाय के और...
नोश फरमाएँ
अक्टूबर 2024
स. देवेन्द्र कुमार बहल

लघुकथा विशेषांक
नवंबर 2024
अ. स. डॉ. संदीप तोमर

पूज्यनीय स्व. फूलचंद यादव
को समर्पित विशेषांक
दिसम्बर 2024
स. देवेन्द्र कुमार बहल
को समर्पित विशेषांक

मोहन राकेश साहित्य
निधि विशेषांक
जनवरी 2025
अ. स. डॉ. मीरा कांत

29 अगस्त, 2014, डॉ. मुरली मनोहर जोशी से देवेन्द्र कुमार बहल, संपादक 'अभिनव इमरोज़' एवं सभ्या प्रकाशन, पुरस्कार ग्रहण करते हुए

29 अगस्त, 2014, डॉ. मुरली मनोहर जोशी से श्री अतुल तलवार, संरक्षक एवं देवेन्द्र कुमार बहल, सम्पादक 'अभिनव इमरोज़' पुरस्कार ग्रहण करते हुए

'अभिनव इमरोज़' के संरक्षक

State of the Art

BANQUET HALL

for pre-wedding, Wedding
Corporate events and Social Get toghether

Address : J. K Resorts, Village Rania Malerkotla Road, Ludhiana,
Contact : Sahil Sood +91-94170-31265, Mng.+91-94172-15265
E-mail : sahilsood1@gmail.com

सम्पादक देवेन्द्र कुमार बहल श्री बी.के. शर्मा से पुरस्कार ग्रहण करते हुए, साथ में हैं श्री सुधीर मल्होत्रा (प्रेजीडेंट), श्री अशोक घोष (चेयरमैन) और डॉ. अशोक गुप्ता (जन. सेक्रेट्री), फेडरेशन ऑफ इंडियन पब्लिशर्स।

अभिनव इमरोज़
अखिल भारतीय वितरक
सम्या प्रकाशन
WH-44, माधापुरी इंडस्ट्रीयल एरिया,
फेस-I, नई दिल्ली-110064
फोन, 011-45124804-9, +91 9910497972

'अभिनव इमरोज़' दिसम्बर, अंक 12, 2014
RNI NO. DELHIN/2012/40913 ISSN 2321-1105
REG. DL-SW-10/4168/13-15
License No. : U(SW)-11/2014-15
License to Post without payment
Date of publication, 1st of December, 2014,
Date of Posting 3rd & 4th of December, 2014

मिशनः-
मौलिक चिंतन और उभरती
प्रतिभा को प्रोत्साहन

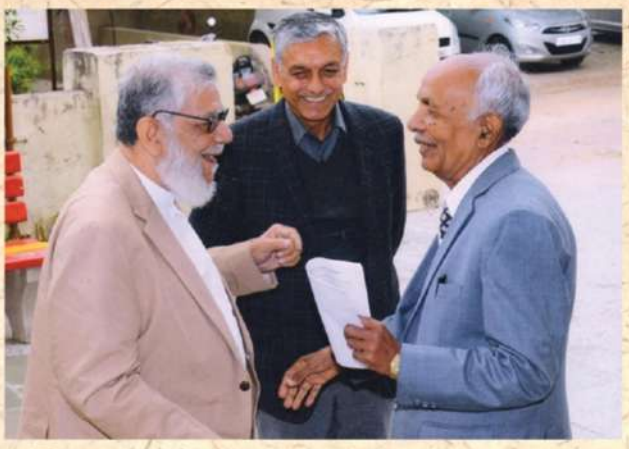

पंचकूला : एहसास अदबी सोसाइटी (रजि.) पंचकूला की ओर से स्वर्गीय डॉ. ओम प्रकाश अग्रवाल जार अल्लामी तथा साहित्य प्रेमी स्वर्गीय मुनीष कालिया की याद में प्रख्यात शायर उपन्यासकार, यात्रा संस्मरणकार व समालोचक बी.डी. कालिया 'हमदम' के व्यक्तित्व और कृतित्व पर चर्चा गोष्ठी और विराट कवि सम्मेलन का आयोजन भारत विकास परिषद् भवन, सैक्टर–12–ए, पंचकूला में विगत दिनों किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पंचकूला के उपायुक्त जनाब विवेक आत्रेय, दिल्ली से पधारे अभिनव इमरोज़ के सम्पादक देवेन्द्र बहल अध्यक्ष, सहारनपुर से आए साहित्यकार व पत्रकार जैड अख्तर विशिष्ट अतिथि, समाज सेवक व साहित्यकार कृष्ण दुल्ल विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। एहसास अदबी सोसाइटी के अध्यक्ष बी.डी. कालिया हमदम भी उपस्थित थे। मंच संचालन प्रसिद्ध शायर बलवीर तन्हा ने किया।

दिनांक 08 अगस्त 2015 को दिल्ली में परम्परा सम्मान–अर्पण के अवसर पर कवयित्री डॉ. मालिनी गौतम को "परम्परा ऋतुराज सम्मान" के अन्तर्गत पुरस्कृत किया गया। "अभिनव इमरोज" की ओर से हार्दिक बधाई।

बाल–चित्रकार

व्यापक पाण्ड्या
(09.11.2009)
574, मंगल ज्योत सोसाइटी,
संतरामपुर–389260 (गुजरात)

फेडरेशन ऑफ इंडियन पब्लिसर्स द्वारा "अभिनव इमरोज़" पुरस्कृत, प्रतिनिधि राहुल पुरस्कार ग्रहण करते हुए।

अभिनव इमरोज
सभ्या प्रकाशन
बी–2/3223, वसंतकुंज
नई दिल्ली–110070
मो. : 09910497972

RNI NO. DELHIN/2012/40913
REG. DL-SW-10/4168/16-18
License No. : U(SW)-11/2016-17
License to Post without payment
Date of publication, 1st of October, 2016,
Date of Posting 3rd & 4th of October, 2016
Place of Posting :'NIEHO'

मिशनः–
मौलिक चिंतन और उभरती
प्रतिभा को प्रोत्साहन

फेडरेशन और इंडियन पब्लिशर्स द्वारा सभ्या प्रकाशन निरंतर चौथे वर्ष सम्मानित

2013 2014 2015 2016

Dr. Uma Trilok, among women poets from four countries of south-east Asia, meeting at Singapore for a poetry recital. "Abhinav Imroz" is proud of her association with us.

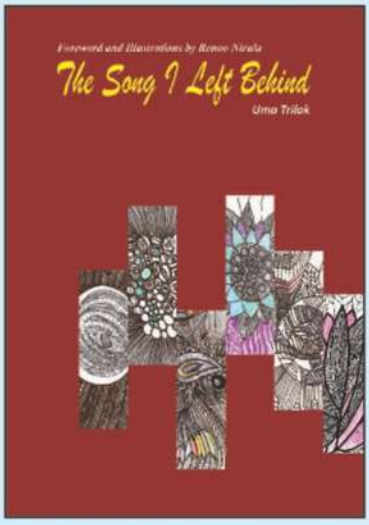

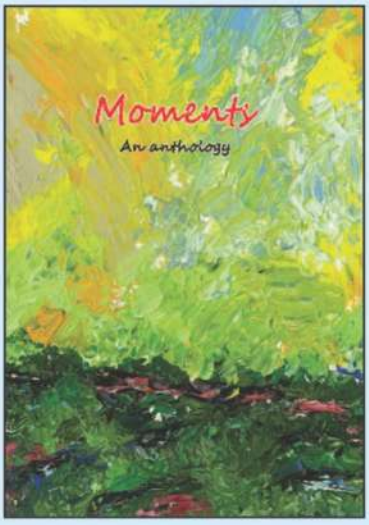

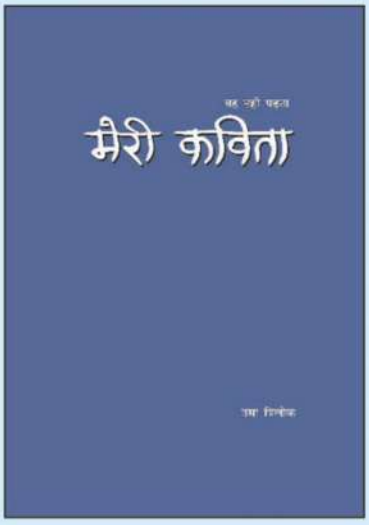

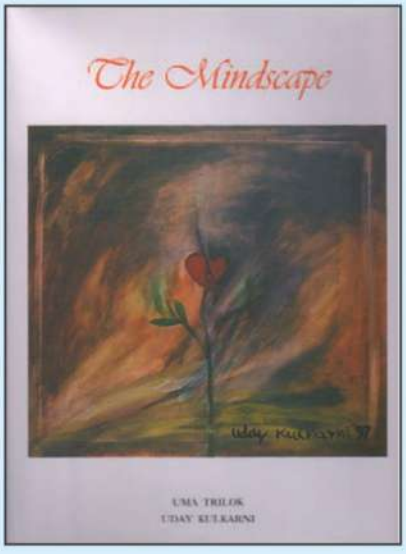

The Song I Left Behind मूल्य : रु. 600/–
Moments "An Anthology" मूल्य : रु. 600/–
मेरी कविता मूल्य : रु. 300/–
उस पार... मूल्य : रु. 300/–
The Mindscape मूल्य : रु. 1000/–

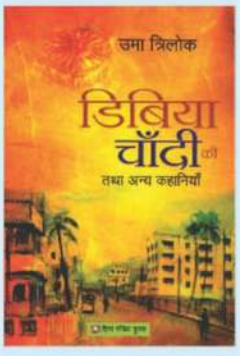

अभिनव इमरोज
सम्या प्रकाशन
बी–2/3223, वसंतकुंज
नई दिल्ली–110070
मो. : 09910497972

RNI NO. DELHIN/2012/40913
REG. DL-SW-10/4168/16-18
License No. : U(SW)-11/2016-17
License to Post without payment
Date of publication, 1st of December, 2016,
Date of Posting 3rd & 4th of December, 2016
Place of Posting : 'NIEHO'

मिशनः–
मौलिक चिंतन और उभरती
प्रतिभा को प्रोत्साहन

'कैन फाइट कैंसर' की चौथी वॉकाथॉन, लुधियाना की कुछ झांकियाँ

हमारी प्रेरणा, हमारी मीतू

'कैन फाइट कैंसर' को जन्म दिया तूने
इसका नामकरण भी किया तूने
'वॉकाथॉन' की शुरुआत भी हुई तुम्हीं से
याद है, वह पहली मुलाक़ात
दर्द सांझा किया था आपस में
दो अनमोल मोती टपके थे तुम्हारी आँखों से
वह आंसू नहीं, अक्स था तुम्हारे अटल विश्वास का
तुम कद की छोटी, पर साबुत कदमी से भरपूर
मैंने तुम्हें लाल बहादुर शास्त्री खिताब से नवाज़ा

नहीं कभी शिकन देखी तुम्हारे माथे पर
नहीं दुख की झलक देखी तुम्हारी आँखों में
सीखा तुमसे ज़िन्दगी में लड़ने का जज्बा
प्यारी बेटी, तुम हम सब की प्रेरणा हो
तुम एक ऐसी योद्धा नतमस्तक हो जाते हम,
हमारी शक्तिपुंज !
कोटिशः नमन तुम्हारी सिपहसालारी को

— जगजीत सूद,
मो. : 09417033265

डॉ. कुणाल जैन
मो. : 08427416483

RELEASE OF
In Reverie
'In Reverie'
(An anthology)
by
Renoo ji & Dr. J.P. Das
at
'DELNET'
Nelson Mandela Road, (Opp. Ambiance Mall)
Vasant Kunj, New Delhi-110070
With Best Compliments :
Sabhya Prakashan

प्रेम-प्रोत्साहन-प्रतिभा का प्रतीक

अभिनव इमरोज़

Abhinav Imroz

ISSN 2321-1105

वर्ष-6, अंक-3, मार्च, 2017

मासिक पत्रिका रू. 50/-

नासिरा जी का हार्दिक अभिनंदन

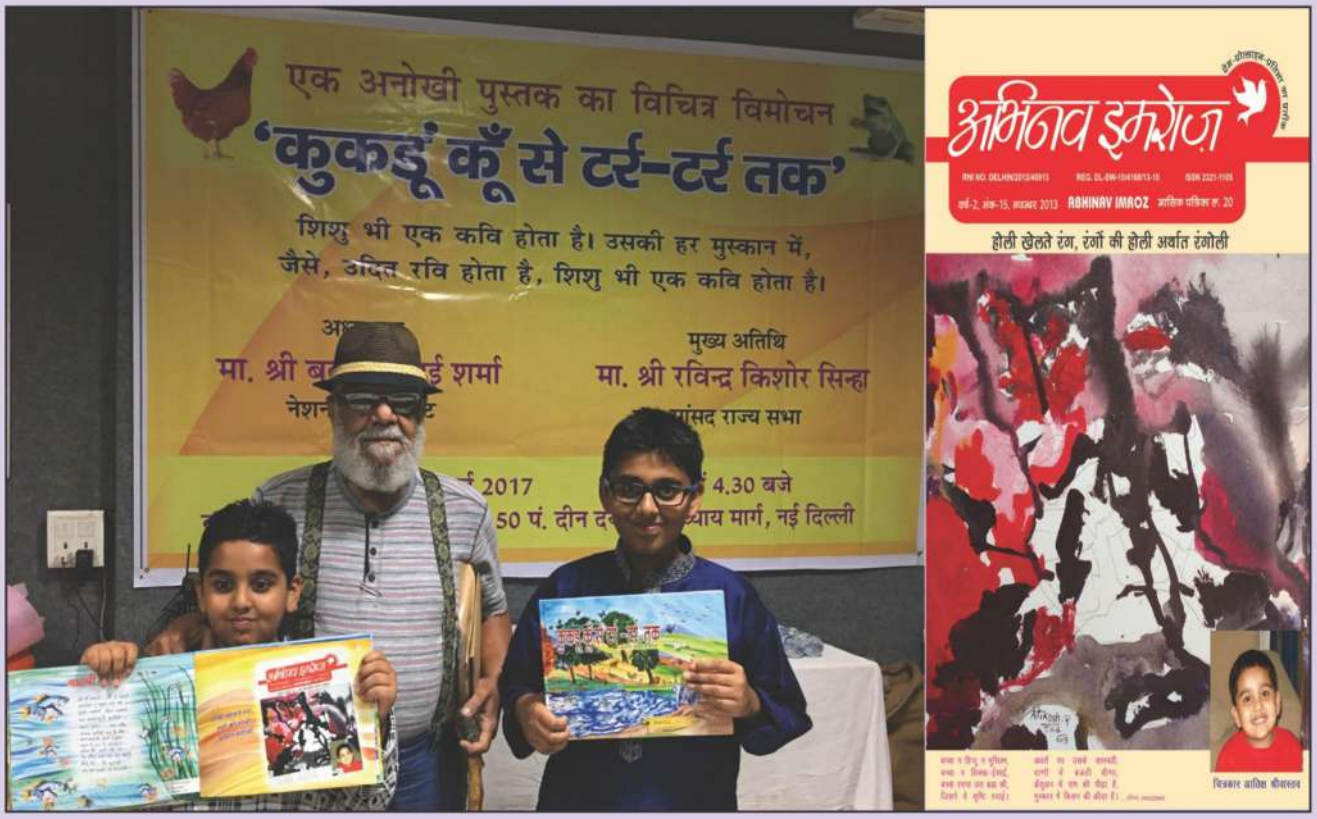

मिर्ज़ा ग़ालिब ने लिखा था- उग रहा है दर-ओ-दिवार से सब्ज़ा 'ग़ालिब'/हम बायाबां में हैं और घर में बहार आई है। अग्रित श्रीवास्तव की कविता संकलन 'कुकडूं कूँ से टर्र-टर्र तक' को उठाते ही हरे-भरे जंगल का कोई हिस्सा ज्यों हाथ में आ जाता है। ग्यारह वर्षीय अग्रित ने बाल भारती, नंदन, लोटपोट, चम्पक, साप्ताहिक हिंदुस्तान के ३५/४० साल पुराने अंको में छपी कविताओं को साभार संकलित किया है। सुधीर त्रिपुरारी के चित्र व आवरण तथा सुश्री राधा शर्मा का लिपिकरण पुस्तक के आकर्षण को बढ़ाते हैं

विगत ३० जुलाई को नई दिल्ली के 'प्रवासी भवन' में पुस्तक का विमोचन हुआ। मुख्य अथिति के रूप में उपस्थित थे राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के अध्यक्ष श्री बल्देवभाई शर्मा। सांसद श्री रवीन्द्र किशोर सिन्हा और अभिनव इमरोज़ के सम्पादक श्री देवेन्द्र कुमार बहल ने भी मंच साँझा किया। वक्ताओं ने भारत में बाल साहित्य की वर्तमान दैन्य पर चिन्ता व्यक्त की, बाल साहित्य की किताबों को छापने से प्रकाशक परहेज़ कर रहे है। यह भी चिंता का विषय है कि बाल साहित्य का स्थान विदेशी कार्टून चनेलों ने ले लिया है। अग्रित गुरूग्राम के एक पब्लिक स्कूल का विद्यार्थी है हर्ष का विषय है कि उसने संकलन के लिए अंग्रेजी नहीं बल्कि हिन्दी की कृतियाँ चुनी है।

दोनों बाल साहित्यकार एवं चित्रकार अग्रित और आतिक्ष सम्पादक के साथ। आतिक्ष की एक पेंटिग अभिनव इमरोज़ के अंक नवम्बर २०१३ में छप चुकी है जब वो महज़ ४ साल का था।

प्रस्तुति प्रियदर्शी दत्ता, नई दिल्ली, मो.9899146841

'अभिनव इमरोज़' 2013 से फ़ेडरेशन ऑफ इण्डियन पब्लिषर्स द्वारा निरंतर सम्मानित।
2017, डा० महेश शर्मा मंत्री संस्कृति, भारत सरकार से प्रेम कुमार पुरकार प्राप्त करते हुए।

2 सितम्बर 2017 की शाम को नयी दिल्ली के हिन्दी भवन में अयन प्रकाशन द्वारा आयोजित एक भव्य समारोह में ख्यातिप्राप्त ग़ज़लकार श्री विज्ञानव्रत को प्रथम मनु 'स्मृति' सम्मान से सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रसिद्ध साहित्यकार श्री बालस्वरूप राही ने की। विशिष्ट अतिथि थे ख्याति प्राप्त साहित्यकार /पत्रकार श्री बी.एल. गौड़। प्रसिद्ध व्यंग्कार श्री हरीश नवल मुख्य वक्ता थे। श्री लक्ष्मी शंकर वाजपेयी और श्री काम्बोज भी मचंस्थ थे।

अभिनव इमरोज़ परिवार की ओर से भाई विज्ञानव्रत का हार्दिक अभिनंदन एवं श्री भूपालजी को सफल आयोजन के लिए बधाई।

मिशन :- मौलिक चिंतन और उभरती प्रतिभा को प्रोत्साहन

अभिनव इमरोज़

Abhinav Imroz

प्रेम-प्रोत्साहन-प्रतिभा का प्रतीक

ISSN 2321-1105

वर्ष-7, अंक-1, जनवरी 2018

मासिक पत्रिका रू. 50/-

इमरोज़ भाई साहिब, जन्मदिन की शुभकामनाएं:-

कविता

एक बार
एक सपने ने ज़िन्दगी से पूछा
तू कब तक
कविता लिखती रहेगी
ज़िन्दगी ने कहा
तब तक जब तक
हर ज़िन्दगी आप ही
कविता न बन जायें...

सोहनी

तस्वीरों की दुकान के बाहर
सोहनी की तस्वीर देखी
मैं उस सोहनी को घर ले आया
इस तस्वीर वाली सोहनी को देखते-देखते
मुझे कल की वह सोहनी दिखने लग गयी
जिसने पंजाब का एक दरिया
घड़े के साथ पार किया था - कई बार
और आज मुझे एक और सोहनी दिख रही है।
जिसने आधी सदी से
अपनी कलम के साथ
सारा पंजाब पार किया है लगातार...

अमृता

फकीर कहते हैं
अपनी मर्जी से जी लेना
करिश्मा है...
ये करिश्मा उसने सहज स्वभाव जी लिया है
वह कतिवा जीती है
और ज़िन्दगी लिखती है...

प्रस्तुति : रवीन्द्र नंदा
दिल्ली, मो0 9650344304

अभिनव इमरोज़ परिवार की ओर से शत-शत नमन

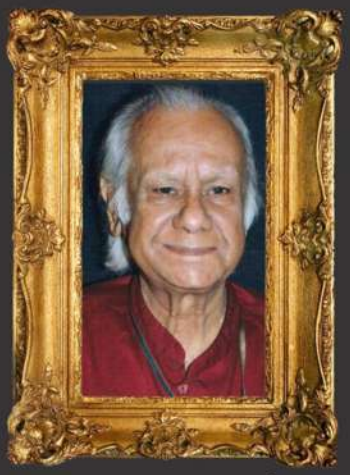

1 जून 1938 7 जनवरी, 2018

इस बार मुझे निर्णय लेते देर नहीं लगी
देह पर लगे सभी टांके काट
समझौते की तरह देह को तोड़
मैं युद्ध में शामिल हो गया।

हे पावन सलिला
मैं तुम्हीं-सा प्रवाहित हो सकूं
तुम्हीं-सा सब बंधन तोड़
किन्हीं बड़ी यात्राओं पर निकल पड़ूं।
(मुक्ति)

एक लय जीवन!
एक लय मृत्यु!
आ ये सभी लयें मुझे गाती हैं
मेरी लय से लय खाती हैं
मेरी धड़कनें, धड़कनों की पहचानें
इनमें लय हो जो जाती हैं (वेदना : एक लय है)

....यह अपने भीतर निरंतर घटित मृत्यु को साक्षात देखना है। उसी मृत्यु की बेबसी में वर्तमान की विसंगत स्थितियों और संस्कारगत मूल्यों की सीधी टक्कर में जूझते-झेलते वह बिना समय गंवाए कुछ समझदार निर्णय लेता है। यही निर्णय मुक्ति की ओर बढ़ने का पहला चरण है। ऐसे निर्णय लंबे वैचारिक तनावों, दबावों के बाद उभरते हैं। स्थितियों की ठीक-ठीक पहचान और उन पर की गई लगातार चिंतना गहरे द्वंद्व को जन्म देती है। ये द्वंद्व व्यक्ति को किसी ठोस निर्णय की ओर जबरन लिए जाते हैं जहां आ कर कवि महसूस करता है कि गहरे मानसिक द्वंद्व और यातनाओं में व्यक्ति ही नहीं परिवेश और वस्तुएं भी निःसत्व हो जाती हैं।.... -मधु शर्मा

राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी से सम्मान ग्रहण करते डॉ. बलदेव बंशी

लोकार्पण

लखनऊ 31 जनवरी, 2022

वर्ष 2021 का श्रीलाल शुक्ल स्मृति इफको साहित्य सम्मान श्री शिवमूर्ति को सुविख्यात साहित्यकार, ममता कालिया , इफको अध्यक्ष श्री दिलीप संघाणी एवं प्रबंध निदेशक इफको डॉ. उदय शंकर अवस्थी ने प्रदान किया।

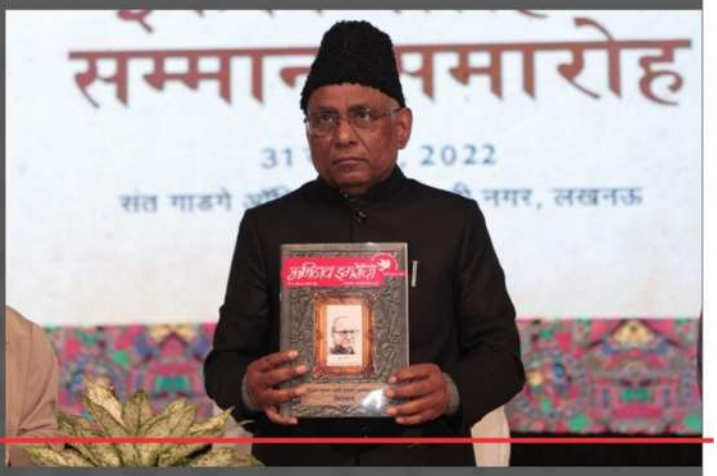

अभिनव इमरोज़ RNI NO. DELHIN/2012/40913 | प्रेषक : बी–3/3223, बसंतकुंज, नई दिल्ली 110070, मो. 09910497972

पैराग्लाइडिंग के दृश्य

अभिनव इमरोज़

RNI NO. DELHIN/2012/40913 | प्रेषक : बी–3/3223, बसंतकुंज, नई दिल्ली 110070, मो. 09910497972

"कुछ फूल कुछ काँटे, हमने आपस में बाँटे
जीवन के हर मोड़पर
हमने एक-दूसरे का इंतजार किया है
हाँ हमने प्यार किया है ।"

मान सम्मान की कुछ झलकियाँ

हिन्दी साहित्य जगत का उभरते हुए सितारे, प्रतिभाओं से परिपूर्ण
डॉ. रेनू यादव तथा युवा कवि केतन यादव डॉ. रामदरश मिश्र
तथा उनकी अर्धांगिनी सरस्वती जी के सानिध्य में आशीर्वाद हेतु

अभिनव इमरोज़

RNI NO. DELHIN/2012/40913 | प्रेषक : बी–3/3223, बसंतकुंज, नई दिल्ली 110070, मो. 09910497972

डॉ. रेनू यादव संपादक अभिनव इमरोज एवं डॉ. रामदरश मिश्र के परिवार संग

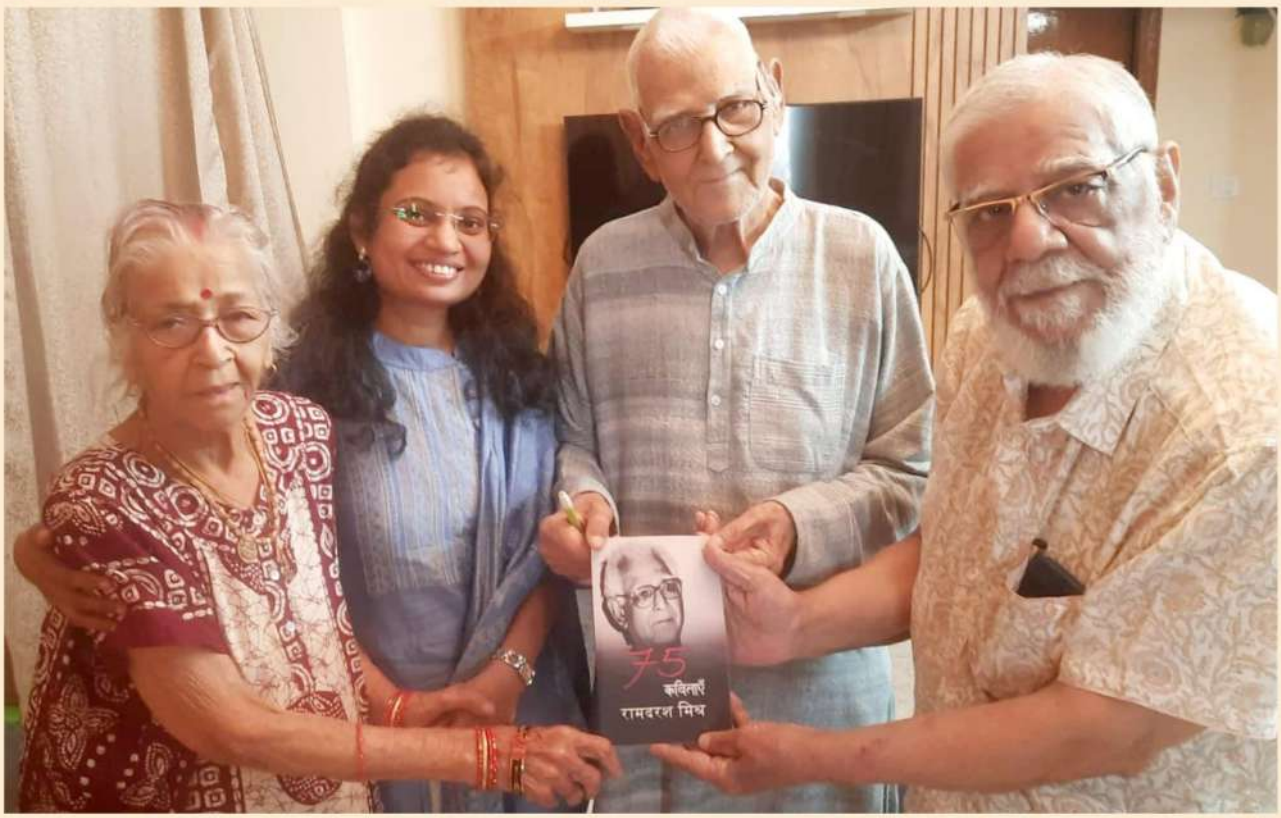

अभिनव इमरोज़

RNI NO. DELHIN/2012/40913 | प्रेषक : बी–3/3223, बसंतकुंज, नई दिल्ली 110070, मो. 09910497972

लेखिका द्वारा बनाई गई पेंटिंग "इंतजार"

हिंदी फिल्म "कोयल" में अदाकारी करते हुए सिने कलाकार सुरेश ओबेरॉय के साथ वीणा विज!

हिंदी फिल्म कोयल में हीरोइन की मां के किरदार में वीणा विज और साथ में सिने कलाकार शम्मी ।

जालंधर दूरदर्शन के लिए लेखिका का साक्षात्कार लेटी पंकज मेहर!

अभिनव इमरोज़

RNI NO. DELHIN/2012/40913 | प्रेषक : बी–3/3223, बसंतकुंज, नई दिल्ली 110070, मो. 09910497972

बाल दिवस 26 दिसम्बर 2023

अभिनव इमरोज़

Abhinav Imroz

प्रेम-प्रोत्साहन-प्रतिभा का प्रतीक

ISSN 2321-1105

वर्ष–12, अंक–12, दिसम्बर, 2023

Website : abhinavimroz.page

जिस कुल जात कौम के बच्चे दे सकते यूँ बलिदान।
उसका वर्तमान कुछ भी हो भविष्य है महा महान।।

हिन्दी कवि मैथिलिशरण गुप्त

पुत्रां नालों बद्ध के तैनूँ सिंह प्यारे ने
मैं वारे जावाँ तेरे चोच न्यारे ने
तुँ धरम देश दी ख़ातिर पुत्र वारे ने
मैं वारे जावाँ तेरे चोच न्यारे ने

–अज्ञात

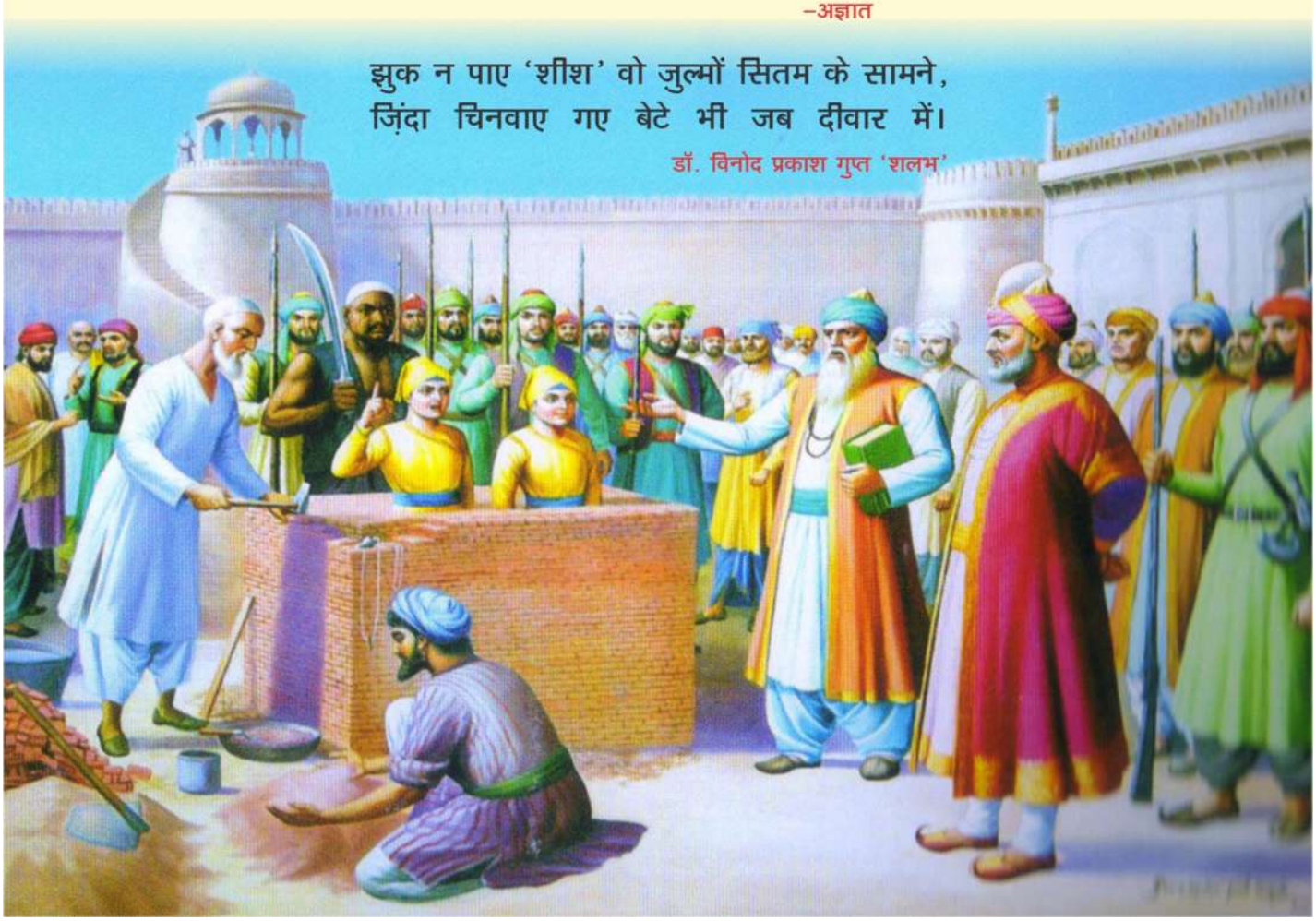

झुक न पाए 'शीश' वो जुल्मों सितम के सामने,
ज़िंदा चिनवाए गए बेटे भी जब दीवार में।

डॉ. विनोद प्रकाश गुप्त 'शलभ'

स्व. संतराम वत्स्य जी अपने परिवार के साथ

लेखक अपने युवा काल में

लेखक मनन मुद्रा में

शहादत

डॉ. उमा त्रिलोक
चंडीगढ़,
मो. 9811156310

युद्ध करते हुए, पिता से,
बिछुड़ गये
दो नन्हे गुरु के जाये
जिन अलख जलायी धर्म की
दी मिसाल उच्च कर्म की

पकड़े गये धोखे से
तब भी, वे कहाँ घबराये थे
लिए दादी का आशीष
जो पेश हुए मुग़लों के आगे
वे नहीं डरे, वे नहीं फिसले
चट्टान की मानिंद खड़े रहे, और
गुंजार ओंकार की करते रहे

लालच उनको छू न सका
डर भी उन्हें डरा न सका
वह धर्म की फ़तह बुलाते रहे
छह, आठ की छोटी उम्र में
सिपाही वतन के बने रहे

ज़ोरावर ने ज़ोर दिखाया
फ़तह सिंह ने फ़तह बुलायी
लोगों को बहुत हैरानी हुई
रोते रोते वे सब सोच रहे
कैसे इन बच्चों ने
अपनी पगड़ी की शान बचायी है
धन्य धन्य किया है इन नन्हों ने
धर्म की लाज बचाई है

जब नहीं बच्चों को,
फुसला पाये मुग़ल
तब हार कर ये फ़रमान दिया
" चिन दो दोनों को दीवारों में
यही सज़ा पड़े इन पर भारी "

फिर देख हौसला बच्चों का
हुई शर्मिंदगी मुग़लों पर तारी

बच्चों ने सुनकर ये सब
देखा इक दूजे को हंस कर,
कह रहे हों जैसे
क्या बिगाड़ सकेंगे हमारा
नहीं जानते ये
धर्म हमें है सब से प्यारा
क़ौम की ख़ातिर मिट जायें
यही है सौभाग्य हमारा

हम पर है गुरुओं का आशीष
कितनो को भी मार गिराये ये
देने को क़ुर्बानी
आयेंगे आगे
हज़ारों, लाखों शीश

क़ायम की ऐसी मिसाल
इन गुरुओं के शहज़ादों ने
विश्व के किस देश में बोलो
ऐसी गर्वीली गाथा है पायी ?
नतमस्तक हुआ देश हमारा
इन नन्हों का जय जयकार हुआ
धन्य धन्य है देश हमारा
जहां ऐसे गुरुओं ने जन्म लिया
धर्म की ख़ातिर
क़ुर्बान हुए , और
साहिबज़ादों ने
अनुपम शहादत पायी है

नवोदित प्रतिभा

प्रकृति के प्रश्न

बीती रजनी, तड़के उठ गए इंसान
देखा जब आदित्य, चमक उठे अरमान।

चिड़ियों का सुंदर कलरव, औ' गेहूँ की मुस्कान
पूछती है मिट्टी, अब कहाँ है ध्यान ?

सूखते कुएँ कहते, भरे मटके की जुबान,
देश में ही भुला दिए जा रहे, क्या प्यारे नहीं प्राण ?

निर्जन वनों की खामोशी पूछती, हे इंसान !
मवेशियों की तो आहट नहीं, पूर्ति कैसे हो रही भगवान ?

काली घटा और पहाड़ों की सूनी चट्टान
कहती हैं कच्ची गलियाँ, कहाँ गया इंसान ?

खेत-खलिहान कहते और छप्परों से टपकती बूँदों की आवाज़
आधुनिकता में खो गया क्यों बुजुर्गों का रिवाज

छिपते सूरज का दृश्य, इमारतों में खो गया
पूछती हैं किरणें, कहाँ गया हमारा स्थान ?

निराश है चाँद भी, क्यूँ आँगन छतों में समा गया
शीतलता मेरी शून्य हुई और मनु भीतर सो गया।

कर रहे यहाँ सब क्यों, पैसों का गुणगान
क्या सच में नहीं रही, अच्छे बुरे की पहचान ?

सूखे पत्ते क्या पूछे, वर्षानंद तक को भूला दिया
सुगंध मिट्टी की लुप्त हुई, आकांक्षाओं ने वनों को जला दिया।

दीपिका कुशवाहा, बी.ए.हिन्दी (ऑनर्स), प्रथम वर्ष,
भारतीय भाषा एवं साहित्य विभाग, गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय
ग्रेटर नोएडा - 201312

प्रेम-प्रोत्साहन-प्रतिभा का प्रतीक

अभिनव इमरोज़

Abhinav Imroz

ISSN 2321-1105

वर्ष–13, अंक–01, जनवरी, 2024

Website : abhinavimroz.page

चाय की चुस्कियों में बातें, कड़वी नहीं लगतीं,
चाय की चुस्कियों पर मुलाकातें लम्बी नहीं लगतीं ।

चाय मजेदार चीज़ है यारों
चाय सुबह की देती ताज़गी,
पति बनाए पत्नी को आज़ादी,
दिन भर फिर काम करा लो,
सुबह की एक चाय पिला दो ।

चाय पर किसी को भी बुला लो,
चाय पी लो चाय पिला लो,
दुनिया भर की बाते उगलवा लो,
चाय मजेदार चीज़ है यारों ।

अगर चाय पीने बैठो तो,
इधर-उधर की बात चलाकर,
धीरे से काम निकलवा लो,
कितने का भी माल टिका दो ।

चाय मजेदार चीज़ है यारों

कुमुद वर्मा
अहमदाबाद,
मो. 98986 33354

चाय बगानों के रंग चाय के चुस्की के संग

सीमा सिंह राय, सुकेश सिंह का चाय पर आलेख, कविताएँ एवं क्षणिकाएँ पृष्ठ संख्या 55-56 पर पढ़ें

चाय और तुम

चाय की तरह ही तुम
मेरी आदत बन चुके हो.
मेरी खौलती चिंताओं को,
तुम भाप बनाकर उड़ा देते हो,
दूध की ही भांति एकाकार हो,
चीनी की तरह तुम मेरे
ज़ज्बातों में रच-बस जाते हो.
मेरी गलतियों को,
छलनी में छानकर
पत्ती की तरह तुम फेंक देते हो
और फिर मेरे सर्द अहसासों में,
गर्म चुस्कियों से गर्माहट भर देते हो..
इसीलिए ही आज,
तुम चाय की तरह
मेरी आदत बन चुके हो.

मंजु महिमा, अहमदाबाद,
मो. 99252 20177

प्रतिमा, अतुल तलवार चाय का आनंद उठाते हुए

तुम आना

उमा त्रिलोक
मोहाली, पंजाब,
मो. 98111 56310

सर्दी में,
खिड़की के पर्दों से छन छन कर
आती है जैसे धूप
उसी गुनगुनी गर्माहट से
छू जाना मुझे

तुम आना वैसे ही
जैसे बरसातों में अचानक होने लगती है
बूंदाबांदी
गरजते है बादल और कड़कती हैं
बिजलियां
उन्ही बिजलियों के खौफ से बचाने
चुपके से आकर
मेरा कंधा सहलाना

हौले से आना
फिर बैठना सट कर
मेरे ही हाथों की कलम को लेकर
मेरी ही लिखी अधूरी सतर को
पूरा कर जाना

जानती हूं
तुम्हे भरी गर्मी में भी
चाय बहुत भाती है
तुम आना
मेज़ पर रखी
मेरी ही प्याली से, दो घूंट
चाय चुरा लेना

तुम्हारे आते ही
मैं कट जाऊंगी दुनिया से
समेट लूंगी
इन पलों को अपने ही दायरे में
जहां, सिर्फ
तुम्हारे और मेरे लिए ही जगह होगी
तुम
इन्ही लम्हात के पहलू में समा जाना
तुम आना

बारिश और चाय

बिजली की चमक और धनक
मेघ समूह का गर्जन
खोल लिए है मैंने मन के सारे तिलिस्मी दरवाजों को।

बारिश की बूंदें ...
सिर्फ धरती, छत, दीवारों से नहीं खेल रही अठखेलियाँ
तपते मन को भी गुदगुदाया है
चेहरे को छूकर धीरे से कहा है_
"शहर बंद है तो क्या हुआ !
अरसे से कोई अपना नहीं आया
तो क्या हुआ !
तू है ना !
तो अपने होने का राग छेड़
तार सप्तक के बुर्ज़ तक पहुंच
फिर तलवों पर,
हथेलियों पर हमें उठा
भर कुलांचे
अपने नाम लिख
कृष्णकली, शकुंतला या ... रश्मिरथी।

कहीं तो होगा वह काल्पनिक
प्रवीर, दुष्यंत
या ... सूर्यपुत्र राधेय/कौन्तेय"
सुनकर शोख बूंदों की बात
हवाओं से गुफ्तगू करने को
मैंने खोल दिए हैं
कटि तक लहराते अपने बाल
सज संवर के उतर गई हूं
प्रेम के पनघट की सीढ़ियां
लहरों के आतिश पर
चढ़ा दी है चाय की केतली
और अब ...
सबकी नज़रों से दूर
दो कप गर्म चाय की प्याली के संग
घूंट घूंट पी रही हूं,
जी रही हूं,
मन के सुरीले ख्वाब।

रश्मि प्रभा
ठाणे , मुम्बई
मो. **7899801358**